

संचयन (1) - हरिहर काका

शब्दार्थ -

- 1) यंत्रणाओं - कष्टों; क्लेशों; यातनाओं
- 2) आसक्ति - लगाव
- 3) सयाना - बड़ा होना
- 4) मझदार - जल प्रवाह या भ्रवसागर के मध्य में
- 5) विलीन - लुप्त होना
- 6) विकल्प - दूसरा उपाय
- 7) ठाकुरबारी - देवस्थान
- 8) संचालन - चलाना
- 9) नियुक्त - लगाया गया
- 10) दवनी - गोहूँ / धान निकालने की प्रक्रिया
- 11) अगउम - प्रयोग में लाने से पहले देक्ता के लिए निकाला गया अंश
- 12) घनिष्ठ - गहरा
- 13) प्रवचन - भाषण; अपदेश

मशगूल - व्यस्त

- 14) हुमादा - गहवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री
- 15) तत्क्षण - उसी पल
- 16) अकारथ - बेकार
- 17) मुस्तैद - तैयार / कमर कसकर तैयार रहना
- 18) निष्कर्ष - परिणाम
- 19) बय - वसीयत
- 20) अप्रत्याशित - आकस्मिक
- 21) वय - उमर
- 22) महटिया - टाल जाना; नज़रअंदाज़ कर देना
- 23) कल - युक्ति; बुद्धि
- 24) आच्छादित - ढका हुआ
- 25)

Q/A

कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

→ कथावाचक और हरिहर काका, दोनों एक ही गाँव के रहने वाले थे, इसलिए उनका आपस में गहरा नाता था।

कथावाचक गाँव के कुछ ही लोगों की इज्जत करते थे, और हरिहर काका उनमें से एक थे। इसकी कुछ खास वजहें थीं।

• हरिहर काका उनके पड़ोसी थे और हमेशा उनके पास रहते थे।

• कथावाचक की माँ बताती थी कि हरिहर काका ने उन्हें बचपन में बहुत प्यार दिया था।

• जब कथावाचक बड़े हुए तो उनकी पहली दोस्ती हरिहर काका के साथ ही हुई थी। वे दोनों आपस में दिल खोलकर बातें करते थे।

हरिहर काका को मंहत और अपने भाई एक ही जेठी क्यों लगाने लगे?

→ हरिहर काका का कोई बच्चा नहीं था और उनके पास काफी जमीन थी। पहले तो भाईयों ने उनका खूब ध्यान रखा, लेकिन धीरे-धीरे उनकी पत्नियों का बर्ताव बदल गया। मंहत को जब ये पता चला तो उसने काका को ठाकुरबारी बुलाया और उनकी खूब सेवा की। फिर मंहत ने उनसे उनकी जमीन ठाकुरबारी के नाम करने को कहा। जब काका ने मना कर दिया, तो मंहत ने उन्हें मारकर-पिटकर जबरदस्ती कागज पर अँगूठा लगावा लिया। इस बात पर बहुत शगड़ा हुआ। दोनों ही तरफ के लोग सिर्फ अपना ही फायदा देख रहे थे। वे हरिहर काका को दुखी करके उनकी जमीन हड़पना चाहते थे। इसलिए हरिहर काका को अपने भाई और मंहत एक जैसे लगे।

3. ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार अद्वेष के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?

→ ठाकुरबारी के लिए गाँव वालों के मन में जो ज्यादा इज्जत है उससे पता चलता है कि वे ठाकुर जी को बहुत मानते हैं, उनमें पूरा विश्वास रखते हैं और उनसे बहुत प्यार करते हैं। वे यह मानते थे कि ठाकुर जी की कृपा से ही उनके हर काम में सफलता मिलती है।

4. जनपद होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

→ हाँ, जनपद होने पर भी हरिहर काका दुनिया को अच्छी तरह से समझते थे। वे यह जानते थे कि जब तक उनकी ज़मीन उनके पास है, तभी तक सब लोग उन्हें पसंद करेंगे। ठाकुरबारी का मंहत उनसे इसलिए मीठी-मीठी बातें कर रहा था क्योंकि वह उनकी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम करवाना चाहता था। उनके भाई भी उनका साथ सिर्फ ज़मीन की वजह से करते थे। हरिहर काका ने ऐसे कई लोगों को देखा था जिन्होंने ज़िंदा रहने पर भी ज़मीन दूसरों को दे दी थी और बाद में बहुत पछताए थे। वे नहीं चाहते थे कि उनके साथ भी ऐसा ही हो।

5. हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

→ मंहत के कहने पर ठाकुरबारी के शायदु-संत हरिहर काका को जबरदस्ती उठाकर ले गए। पहले उन्होंने प्यार से कागज़ पर अंगूठ का निशान लेने की कोशिश की। जब उन्हें सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने जबरदस्ती निशान लिया और काका के हाथ-पैर और मुँह बाँधकर उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया।

6. हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

→ हरिहर काका के मामले में गाँव के लोग दो हिस्सों में बंट गए थे। कुछ लोग परिवार वालों के साथ थे। उनका कहना था कि काका को अपनी ज़मीन अपने भाईयों के नाम कर देनी चाहिए, क्योंकि वह उनका हक है। दूसरे लोगों का मानना था कि मंहत हरिहर की ज़मीन लेना चाहता है ताकि उन्हें मुक्ति मिल सके। उनका कहना था कि काका को अपनी ज़मीन ठाकुरजी के नाम कर देनी चाहिए, जिससे उनका नाम होगा और उन्हें सीधा स्वर्ग मिलेगा। सबकी अपनी-अपनी राय थी, क्योंकि हरिहर काका अकेले थे और उनका कोई बच्चा नहीं था। उनकी पंद्रह बीघे ज़मीन की वजह से सबका लालच बढ़ गया था।

7. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं।" ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

→ लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि जब तक इंसान को दुनिया की चीजों से बहुत ज्यादा लगाव होता है, तभी तक वह मरने से डरता है। जब उसे यह समझ आ जाता है कि मौत तो आनी ही है और यह शरीर पुशाना देने पर इमगवान हमें नया जीवन देते हैं, तब वह मौत से नहीं डरता। बल्कि, ज़रूरत पड़ने पर वह मौत को भी खुशी-खुशी अपना लेता है।

8. समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

→ आजकल समाज में रिश्तों की असली कीमत कम होती जा रही है। ज्यादातर लोग अपने फायदे के लिए रिश्ते निभाते हैं। अब रिश्तों से ज्यादा लोगों की तरक्की और अपना काम निकलवाना ज़रूरी हो गया है। रिश्ते ही हमें बताते हैं कि कौन अपना है और कौन नहीं। रिश्तों से ही समाज में हमारी पहचान बनती है। सुख-दुख में रिश्ते ही साथ देते हैं। यह दुख की बात है कि आजकल रिश्तों में व्यास कम और स्वार्थ ज्यादा दिखता है। इस कहानी में भी अगर पुलिस न आती तो शायद परिवार वाले काका को मार देते। आजकल रिश्तों से ज्यादा पैसे को महत्व दिया जा रहा है।

9. यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?
→ अगर मेरे आसपास ऐसा कोई हो, तो मैं उनकी मदद ऐसे करूंगा:

• सबसे पहले उनके घरवालों को समझाएंगे कि उन्हें उनका ध्यान रखना चाहिए।

• उनकी खाने-पीने उत्तेश रहने की व्यवस्था ठीक से करेंगे।

• परिवार वालों को बताएंगे कि अगर वे उनकी मदद करेंगे तो उनकी ज़मीन उन्हें अपने आप मिल जाएगी।

• जो धोकेबाज़ मंस्त या पुजारी हैं, उनकी शिकायत पुलिस से करेंगे ताकि वे जबरदस्ती ज़मीन न ले सकें।

• मीडिया को भी इस बारे में बताएंगे ताकि सबको पता चले और उन लोगों को सड़ मिले।

10. हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

→ हरिहर काका को अपने घर और धर्म दोनों से भरोसा उठ गया था, इसलिए वे चुप रहने लगे थे। अगर उनके गाँव में मीडिया होती तो शायद हालात थोड़े अलग होते। मीडिया उनकी बात लोगों तक पहुँचाती और उन पर जो अत्याचार हुआ, उसके बारे में सबको बताती। मीडिया हरिहर काका को शायद इन्साफ दिलवाती और उन्हें आज़ादी से जीने में मदद करती। जिस घर में वे जी रहे थे, मीडिया के आने के बाद शायद वह घर खत्म हो जाता।